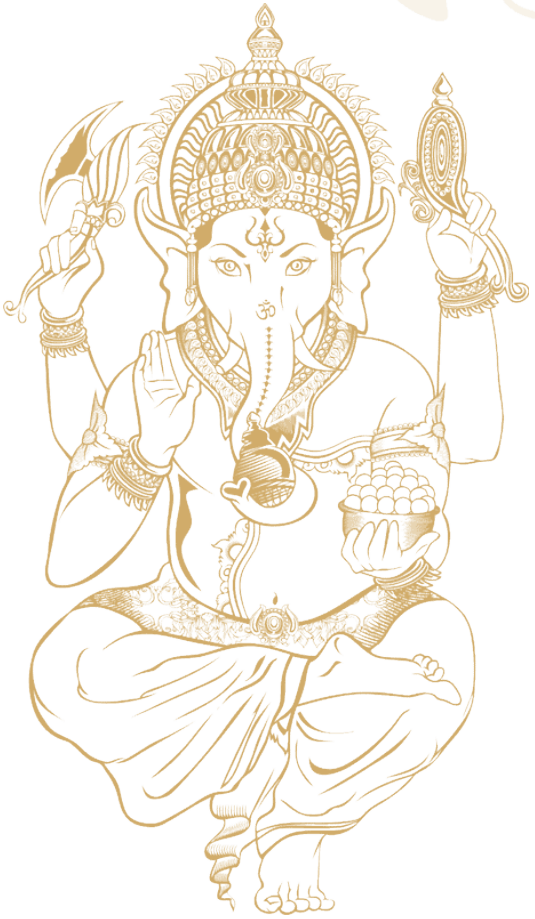

Kanubhai Babaldas Patel

30 Jul 1969

04:00 AM

Mahesana

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119076201**

तिथि 30/07/1969 **समय** 04:00:00 **वार** बुधवार **स्थान** Mahesana **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:25:59
अक्षांश 23:37:00 उत्तर **रेखांश** 72:28:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:40:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:49:26 घं
वेलान्तर	00:06:22 घं
सूर्योदय	06:08:30 घं
सूर्यास्त	19:24:17 घं
चैत्रादि संवत	2026
शक संवत	1891
मास	आषाढ़
पक्ष	शुक्ल
तिथि	1
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	आयुष्मान
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	गा-गगन
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

मंगल 6वर्ष 2मा 24दि
शनि
23/10/2009
23/10/2028

शनि	26/10/2012
बुध	06/07/2015
केतु	14/08/2016
शुक्र	14/10/2019
सूर्य	25/09/2020
चन्द्र	27/04/2022
मंगल	05/06/2023
राहु	11/04/2026
गुरु	23/10/2028

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 9मा 11दि
सिद्धा
11/05/2025
10/05/2032

सिद्धा	20/09/2026
संकटा	10/04/2028
मंगला	20/06/2028
पिंगला	09/11/2028
धान्या	10/06/2029
भ्रामरी	21/03/2030
भद्रिका	11/03/2031
उल्का	10/05/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:04:42	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	बुध	---	0:00			
सूर्य			13:09:44	कर्क	पुष्य	3	शनि	राहु	मित्र राशि	1.24	मातृ	पितृ	क्षेम
चंद्र			24:47:35	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	सम राशि	1.12	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			11:20:43	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	स्वराशि	1.58	पुत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध		अ	21:12:50	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	0.85	अमात्य	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			08:42:45	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.21	ज्ञाति	धन	मित्र
शुक्र			01:43:18	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.41	कलत्र	कलत्र	जन्म
शनि			15:04:52	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	नीच राशि	0.87	भ्रातृ	आयु	वध
राहु	व		28:28:13	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		28:28:13	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

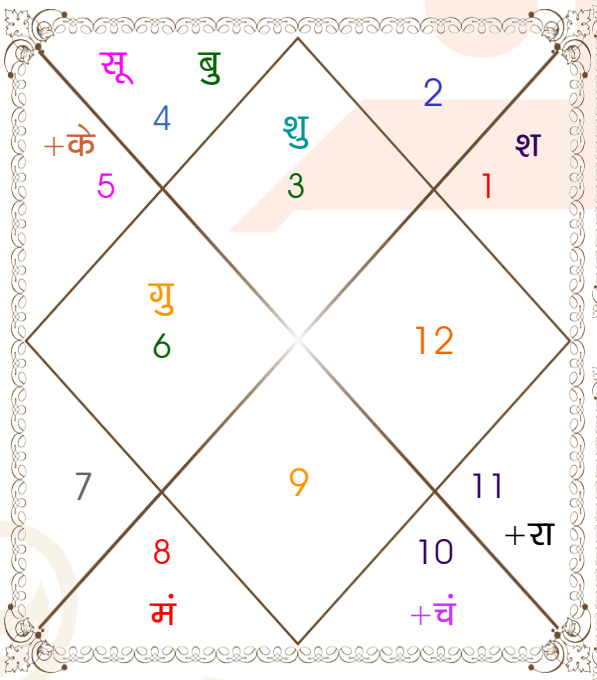

चन्द्र कुंडली

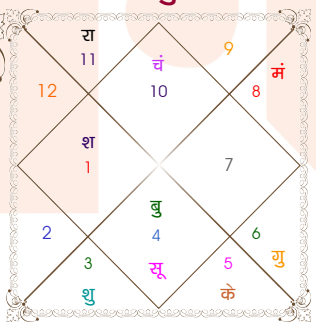

नवमांश कुंडली

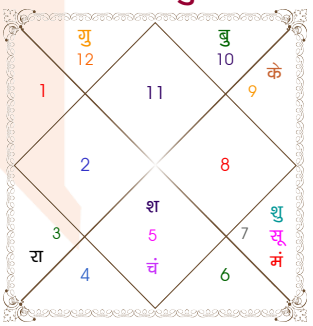

सर्वाष्टकवर्ग

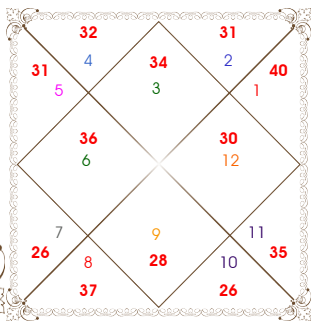

दशमांश कुंडली

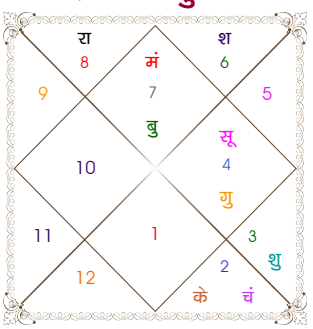

Dadieya occult sciences
Nearby Dabchick tourist place hodal
+919468279936
pankajkumar.dadieya@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार, योनि सिंह, नाड़ी मध्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ग" या "गा" अक्षर से होगा। यथा- गजेन्द्र, गणेश।

आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा आपका चरित्र निर्मल रहेगा जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। समाज में अन्य जनों से आपका लौकिक व्यवहार मधुर तथा चतुराई से युक्त रहेगा। अतः सभी लोग आपके इस सद्व्यवहार से प्रभावित रहेंगे तथा आपकी बातों से भी सहमत रहेंगे। धन धान्य से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे तथा धनवान व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा शरीर में बल की प्रधानता रहेगी। आप एक दयालु पुरूष भी होंगे तथा दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों पर नित्य अपनी कृपा दृष्टि रखेंगे। इससे आप को समाज में सम्मान तथा ख्याति दोनों की प्राप्ति होगी। साथ ही आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे एवं चारों तरफ आपका प्रभाव विद्यमान रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप जीवन में कभी भी निराशा की अनुभूति नही करेंगे अपितु हमेशा आशान्वित रहेंगे। अतः मानसिक कष्ट आप अल्प मात्रा में ही प्राप्त करेंगे। आप जीवन में सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से सम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

गान विद्या एवं संगीत शास्त्र के प्रति आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे एवं इस क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करके ख्याति भी अर्जित करेंगे। समस्त परिवारिक जन तथा बन्धुवर्ग में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के कीमती आभूषणों से भी आप सुशोभित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कई लोगों के मध्य श्रेष्ठ या उच्चाधिकारी भी हो सकेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

दानशीलता की प्रवृति भी स्वाभाविक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा समाज में अन्य जनों के समक्ष आप नित्य अपनी इस प्रवृति का प्रयत्नपूर्वक अनुपालन भी करते रहेंगे। आप एक वीर पुरूष होंगे तथा निर्भयता एवं साहस पूर्वक अपनी समस्याओं का सामना करके उसका समाधान भी करेंगे। इसके अतिरिक्त धन के प्रति भी आपके मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड्ति रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आप ऊँचे कद के पुरूष होंगे तथा आपका मस्तक भी विस्तृत होगा। आपकी आखें सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करेंगे। ठंड से आपको व्याकुलता का आभास होगा तथा इसे सहन करने में प्रायः आप असमर्थता महसूस करेंगे। सत्य के प्रति आप के हृदय में पूर्ण निष्ठा भाव रहेगा तथा इसका जीवन में अनुपालन करने के लिए आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप बाह्य प्रदर्शन के लिए भी धर्म के प्रति अपना श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगे एवं अन्य धार्मिक कृत्यों का आचरण भी करेंगे। साथ ही आप समाज के सभी वर्गो में सम्माननीय रहेंगे एवं दूर दूर तक आप की ख्याति भी रहेगी। आप अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। काम भावना की आप में अधिकता रहेगी

तथा यदा कदा इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। समाज में सभी लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा तथा घृणा एवं द्वेष आप किसी से भी नहीं रखेंगे। लेकिन कभी कभी आप निर्लज्जता का भी प्रदर्शन करेंगे। आप की रूचि अपने से अधिक आयु वाले लोगों से मित्रता करने की रहेगी तथा उन्हीं से आप विशेष मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रखेंगे। आप की रूचि लेखन कार्य में भी रहेगी। अतः काव्य सृजन के क्षेत्र में भी आप सफलता अर्जित कर सकते हैं। आप में पूर्ण उत्साह की भावना भी दृष्टिगोचर होगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पुत्र एवं स्त्री सहित परिवार के पालन में अधिकांश रूप से व्यस्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। साथ ही आप में आलस्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः आपके सांसारिक कार्य धीरे धीरे ही सम्पन्न होंगे परन्तु भाग्य आपका अत्यन्त ही प्रबल रहेगा। अतः भाग्यबल से कई कार्य अल्प परिश्रम से ही सिद्ध हो जाएंगे। आप घूमने फिरने तथा यात्रा आदि करने के लिए भी उत्सुक रहेंगे अतः आपका अधिकांश समय इसी पर व्यतीत होगा। आपका शारीरिक बल भी मध्यम ही रहेगा परन्तु आपकी प्रवृति साहसी होगी एवं वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। अतः कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने के प्रति आपके मन में सदैव उत्साह बना रहेगा। कभी कभी आप अन्य जनों के समक्ष कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। इससे अन्य लोगों में आपके प्रति रोष की भावना उत्पन्न होगी। इसके अतिरिक्त वायु से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी आप पीड़ित रहेंगे तथा समय समय पर इनसे व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। साथ ही आप सर्वप्रकार के सत्वगुणों से सुशोभित रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

पारिवारिक जनों के मध्य आप सामान्य सम्मान तथा आदर ही प्राप्त कर सकेंगे परन्तु कुल या परिवार की परम्परा एवं मर्यादा का आप नित्य पालन करते रहेंगे एवं उसकी वृद्धि में नित्य अपना सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके स्त्री पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा सभी सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप को विविध प्रकार के शास्त्रों का भी विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आप ख्याति तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे। माता के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान तथा सेवा का भाव रहेगा तथा उनसे आपको पूर्ण स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप पुत्रादि संततियों

से भी सम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में इनका पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे। भाइयों से आप विशेष सम्मानित होंगे तथा सभी आपका हार्दिक आदर करेंगे। इसके साथ ही आप अतुल धन वैभव के स्वामी भी बनेंगे। आपके मन में त्याग की भावना भी रहेगी तथा अवसरानुकूल अन्य पारिवारिक तथा सामाजिक जनों के मध्य आप इसका यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप का परिवार विशाल होगा तथा सदैव सुख की चिन्ता में आप चिन्तित रहेंगे साथ ही उसकी प्राप्ति के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की सम्पति को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। अन्य जनों के कल्याण या भलाई के लिए भी आप नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उनकी भलाई करने एवं समस्याओं आदि का समाधान करने के लिए अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप सलाह या मंत्रणा देने आदि के कार्यों में सफल तथा निपुण रहेंगे एवं सभी लोग आपकी इस प्रवृति से लाभान्वित होंगे। बन्धु वर्ग के आप पूर्ण पालन कर्ता रहेंगे तथा उनका सुख दुःख में पूर्ण सहयोग करेंगे। इसके साथ ही शौर्य गुणों से भी आप युक्त रहेंगे एवं साहस पूर्वक अपना सांसारिक जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गान विद्या में पूर्ण रूचि होने के कारण आप इसका विस्तृत ज्ञानार्जन करके इसमें विशेष सफलता अर्जित करेंगे तथा इससे आपको पूर्ण प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी एवं इससे आपका स्वरूप आकर्षक रहेगा इसके अतिरिक्त कामभावना की आप में प्रायः प्रबलता ही रहेगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति अधिक बोलने की रहेगी तथा मन में दया एवं करूणा की भावना भी अल्प रूप में ही विद्यमान रहेगी। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा कभी कभी अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप में शारीरिक बल की भी

प्रबलता रहेगी एवं अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद आदि भी समय समय पर होते रहेंगे।

जीवन में आप उन्माद या प्रमेह आदि रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपका शारीरिक आकर्षण मध्यम होगा तथा यदा कदा अल्प मात्रा में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे अतः श्रोता गण आपसे अप्रसन्न से रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कृें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी एवं निष्ठापूर्वक आप इसका अपने जीवन में अनुपालन करेंगे। आपके सभी कार्य अच्छे होंगे एवं अन्य लोगों को भी उससे सन्तुष्टि तथा लाभ की प्राप्ति होगी। आप हमेशा सद्गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे। अतः समाज में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा। परिवार की समृद्धि के लिए आप चिन्तनशील रहेंगे तथा उसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील एवं परिश्रम करते रहेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति

उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में सर्वथा वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों की सफलता में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल या चर्मपादुकाएं आदि का भी किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपकी समस्त चिन्ताएं दूर होंगी एवं शारीरिक व्याकुलता से भी मुक्ति मिलेगी। साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त शनि के

तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में भी वृद्धि होगी।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।